शिव का प्रतीकात्मक रूप

सुशीला जोशी, विद्योत्तमा
स्वतंत्र लेखिका एवं शिक्षाविद
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
फोन – 9719260777

लम्बी जटाएं ,शीश पर गंगा ,नागों के आभूषण ,माथे पर चंद्रमा ,कण्ठ में विष ,वस्त्र के नाम पर मृगचर्म ,हाथों में शस्त्र के नाम पर एक त्रिशूल ,वाहन के नाम पर नन्दी बैल ,मनोरंजन के नाम पर एक डमरू और भृकुटि में तीसरा नेत्र -क्या विलक्षण रूप। सर्व वस्तु उपयोगी ,पूरी वसुधा कुटुबं ,हर प्राणी में एक ही आत्मा जहाँ शरीर का वैमनस्य निर्थक। यही है हमारी भारतीय संस्कृति का आधार। ईश्वर ,स्रष्टा ,भगवान ,रागात्मक निर्गुण जिसका कोई वेशविन्यास नही। निराकार निर्लिप्त , अद्वैत किंतु अविश्वसनीय। क्योकि विश्वास स्वयं में ही निहित है जिसके लिये सगुणता की आवश्यकता है। सगुणात्मकता भी ऐसी जिसके चार मुख ,अष्टभुजा ,दशनना ,गजमुखी होने के साथ मानव शरीर ,वानर के मुखवाला हनुमान ,शेर के मुख के साथ मानव तन ही क्यो न हो , वैचित्रय आस्था का आधार आज भी अडिग है। ये सभी रहस्यों,दर्शन और आदर्शो से परिपूर्ण रहे। सम्पूर्ण वैचित्र्य अलंकारिक रूप में मानव के अन्तर्मन में गहन पैठ बनाता चला गया और गूढ़ से गूढतर होता चला गया।

जिस समय की कल्पना शिव है वह सृष्टि का आरम्भिक काल हैं। सम्भभवतः पृथ्वी पर पहला दूसरा या तीसरा प्राणी होगा। केश गुम्फन या कटवाने की न तो सोच ही थी और न हो साधन। अतः शीश पर उसे बाल जटाओं में बदले और जटाओं को लपेट कर जूट में परिवर्तित हो शीश पर सहेजे जाने लगे। यदि शिव के शीश पर जटाएं न होती तो गंगा को अपने वेग के साथ बैठने का स्थान भी न मिलता। माथे पर चंद्रमा ज्ञान, सौंदर्य, आस्था और शापग्रस्त चन्द्रमा को सुरक्षा व संरक्षण देने का प्रतीक है। भृकुटि के बीच तीसरा नेत्र आज्ञा-चक्र को गति प्रदान करने का प्रतीक है तो कण्ठ में विष धारण करना यौगिक शक्ति का प्रतीक है जिसके द्वारा कटु ,तिक्त ,विषाक्त ,अपमान ,लांछना जैसे दोषारोपण के विकारों का न मस्तिष्क में स्थान है और न पेट मे उतार कर अपच पैदा करना है वरन उसे बीच मे ही स्थिर कर उदासीन रहने का प्रतीक है। नागों के आभूषण धारण करना नाग जाति की सुरक्षा करना ,उनके विष के औषधीय गुण को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये ,सब प्राणियों को आत्मवत समझने का प्रतीक है। उस समय वस्त्र के अभाव में मौसम से स्वयं को सुरक्षित रखने का माध्यम मृगचर्म ,गजचर्म ,सिंह चर्म आदि को उपयोग में लाया जाना -समय के अनुकूल स्वयं को साधने के प्रतीक है।

त्रिशूल एक ऐसा शस्त्र है जो आकाश से पाताल और पाताल से पृथ्वीलोक की किसी भी समस्या का समाधान करने में सक्षम था। किंतु जब मन मे उमंग हो तब शब्दो को उत्पन्न करनेवाला एक मात्र वाद्य डमरू कभी हृदय की भाषा को शब्द देने के माध्यम का प्रतीक है तो कभी मनोरंजन कर हृदय की स्थिति को बदलने का प्रतीक है।

शरीर पर भस्म जीवन की शाश्वत सत्य है जिसे एक दिन भस्म में ही बनना है जो शरीर के परिवर्तित रूप का प्रतीक है। शमशान वास सर्वदा मृत्यु को साथ रख कर जीने का प्रतीक है। मानव की यह प्रवृत्ति जीवन के लक्ष्य तक पहुँचने में बहुत अधिक सहायक है। यही वह महातत्व है जिसकी उपासना से कुप्रवृत्तियों से बचते हुए प्रकाश में रहने को उद्यत करता है। इस प्रकार की जीवन शैली मनुष्य को असाधारण बनाती है।

शिव का वाहन बैल सौम्यता ,सरलता ,परिश्रम और सात्विकता का प्रतीक है। अर्थात निरन्त निश्छल हो कर कार्यरत रहा जाए तो जीवन की निरन्तरता और सरलता बनी रहती है।

शिव के शीश पर गंगा ठंडे दिमाग होने का प्रतीक है। यदि क्रोध को जीत लिया जाय तो व्यक्ति परिवार ,समाज ,राष्ट्र या सम्पूर्ण ब्रह्मांड के लिए उपयोगी कार्य किये जा सकते है। इस अवस्था मे उत्थान ,उन्नति और आत्मिक विकास निश्चित है।